27

भावकर्म प्रकरण

संस्कृत में तो कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य ये तीन वाच्य हैं। जब क्रिया से प्रधान रूप से कर्ता वाच्य होता है, तब कर्तृवाच्य होता है। यहाँ तो कर्ता में प्रथमा विभक्ति, कर्ता के अनुसार क्रिया में वचन और पुरुष होते हैं यथा रामः पठति, तौ विद्यालयं गच्छतः इत्यादि वाक्यों में कर्ता के अनुसार वचन और पुरुष हैं। और जब क्रिया से प्रधान रूप में कर्म वाच्य होता है तब कर्मवाच्य होता है। यहाँ तो कर्म के अनुसार क्रिया में वचन और पुरुष होते हैं, किन्तु कर्म में प्रथमा विभक्ति ओर कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है। यथा-रामेण पुस्तकं पठ्यते, ताभ्यां विद्यालयः गम्यते इत्यादि वाक्यों में कर्म के अनुसार वचन और पुरुष हैं। अकर्मकधातु के स्थल पर तो क्रिया का ही प्राधान्य होता है, कर्ता का नहीं। इस कारण से उसको भाववाच्य कहा जाता है। यहाँ कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है, क्रिया में तो प्रथमपुरुष एकवचनमात्र ही होता है। लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः इस सूत्र में कर्ता, कर्म और भाव ये तीन प्रकार के लकारार्थ कहे गये हैं। सकर्मक और अकर्मक धातुओं से कर्ता में लकार होते हैं यह आप पूर्व में जान चुके हैं। अब सकर्मक धातुओं से कर्म में और अकर्मक धातुओं से भाव में लकार होते हैं यह प्रदर्शित करने के लिए यह प्रकरण आरंभ करते हैं। यह प्रकरण भाव कर्म प्रक्रिया कहलाता है। भाव वाच्य में केवल प्रथम पुरुष एकवचन होता है, किंतु जब धातु सकर्मकता को प्राप्त करती है, तब कर्मवाच्य में सभी पुरुष और सभी वचन होते हैं यह सभी आगे स्पष्ट होगा।

(कर्तृवाच्यम् कर्मवाच्यम् प्रेष्टार्थप्रतिपादनाय इत्यादि शब्द व्याकरण से व्युत्पादित करने में असमर्थ है। अभी प्रादेशिक भाषाओं में इसका बहुत प्रयोग होता है। अतः उस प्रकार प्रस्तुत करते हैं। परंतु कर्ता में प्रयोग कर्तृवाच्य कर्म में प्रयोग कर्मवाच्य यह व्यवहार होता है यथा सम्भवम कर्तृवाच्य आदि पदों का व्यवहार श्रेष्ठ है।)

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- भावपदार्थ को जानेंगे और वह किसका अर्थ होता है, यह जान पाने में;
- भाववाच्य और कर्मवाच्य क्या होता है यह जान पाने में;
- भाववाच्य और कर्मवाच्य का क्या विशेष है, यह जान पाने में;
- तत्तत् स्थलों पर विशेष सूत्रों के कार्य को जान पाने में;
- भू धातु का भाव में प्रत्येक लकार का रूप जान पाने में;
- सर्वोपरि भाव और कर्म में प्रयोग परिवर्तन कर पाने में।

भाववाच्य और कर्मवाच्य में धातुओं से परस्मैपदात्मनेपद में कैसे पद होता है,यह दर्शाने के लिए यह विधिसूत्र आरंभ करते हैं।

27.1 भावकर्मणोः॥ (१.३.१३)

सूत्रार्थ – ल को आत्मनेपद होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र एकपदात्मक है। लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः यहाँ से लः और अनुदात्तङित आत्मनेपदम् यहाँ से आत्मनेपदम् यह पद अनुवर्तित होता है। भावः च कर्म च तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्वे भावकर्मणी, तयोः भावकर्मणोः यह सप्तमी द्विवचनान्त है। इस प्रकार भावार्थ और कर्म अर्थ में धातु से विहित लकार के स्थान पर आत्मनेपद प्रत्यय होता है, यह सूत्र का अर्थ है। इस प्रकार ही भाववाच्य और कर्मवाच्य में आत्मनेपद होता है, परस्मैपद तो कभी भी नहीं होता है। वहाँ धातु आत्मनेपदी, परस्मैपदी अथवा उभयपदी हो, भाववाच्य और कर्मवाच्य में आत्मनेपद ही होता है, यह निश्चित है।

यहाँ विशेष– फल और व्यापार ये धातु के दो अर्थ होते हैं। वहाँ व्यापार क्रिया अथवा भाव का नाम है। व्यापाराश्रय कर्ता और फलाश्रय कर्म होता है। जब कर्ता में ही फल और व्यापार निहित होते हैं तब वह धातु अकर्मक कही जाती है। यथा देवदत्तः एधते यहाँ एध वृद्धौ यह धातु अकर्मक है। यहाँ वृद्धिरूप फल का और तज्जनक क्रिया का आश्रय देवदत्त ही है। अतः यह धातु अकर्मक कही जाती है। यहाँ प्रश्न है – यदि धातु का ही अर्थ भाव होता है, तब लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः इस सूत्र से किसलिए भावार्थ में लकार होता है, यह कहा जाता है। तथा प्रश्न होने पर कहते हैं – भाव ही धातु का अर्थ है, किन्तु भावार्थक लकार से केवल वह अर्थ अनुदित होता है, न कि उसके अर्थ का विधान होता है। तो यहाँ तक स्पष्ट है कि जब कर्म नहीं होता है, तब ही भाववाच्य (impersonal voice) होता है। सकर्मक स्थल पर तो कर्मवाच्य (passive

voice) होता है। भाव में लकार होने पर कर्तृरूप युष्मद् शब्द से अथवा अस्मद् शब्द के साथ सामान्याधिकरण्य नहीं होता है इस कारण से केवल प्रथमपुरुष ही होता है। मध्यम पुरुष के लिए युष्मद् शब्द के साथ सामानाधिकरण्य आवश्यक है, उत्तमपुरुष के लिए अस्मद् शब्द के सा सामानाधिकरण्य आवश्यक है। भाववाच्य में तो उन दोनों का सामानाधिकरण्य नहीं होता है उस कारण से मध्यम और उत्तमपुरुष नहीं होता है। फलतः केवल प्रथमपुरुष ही होता है। यथा- आस्यते त्वया, आस्यते मया।

इन दोनों वाक्यों में भाव की ही प्रधानता होती है। और वह भाव तिङ् वाच्य ही है, न तो युष्मद् अर्थ अथवा न अस्मद् अर्थ होता है। अतः सामानाधिकरण्य नहीं है। तिङ् वाच्य भाव द्रव्य रूप नहीं है। अतः द्वित्वादि प्रतीति नहीं होती है। उस कारण से द्विवचनादि नहीं होता है, किन्तु उत्सर्ग से एकवचन ही होता है, एकवचनमुत्सर्गतः करिष्यते इस भाष्यवचन के अनुसार। द्वित्वादि की प्रतीति द्रव्य में ही सम्भव होती है। जहाँ लिङ्ग और संख्या का अन्वय नहीं होता है, वह अद्रव्य कहलाता है। इस प्रकार भाव की अद्रव्यरूपत्व होने से द्वित्वादि संख्या प्रतीत नहीं होती है, इस कारण से उत्सर्ग से एकवचन होता है। क्योकिं संख्या की अविवक्षाया में पद को उचित बनाने के लिए सुप्तिङ् प्रत्ययों में से जो कोई एक होता ही है।क्योंकि नियम है- अपदं न प्रयुञ्जीत। भावार्थ में लकार होने पर भाव उक्त होता है और कर्ता अनुक्त होता है, अतः कर्ता के अनभिहित होने पर कर्तृकरणयोस्तृतीया इस सूत्र से तृतीया विभक्ति होती है- त्वया मया अन्यैर्वा भूयते इत्यादि में।

उदाहरण - भूयते। इसकी प्रक्रिया आगे स्पष्ट होगी।

पूर्व भ्वादि प्रकरणों में आपने देखा की वहाँ-वहाँ शप्, श्यन्, श्लु इत्यादि विकरण होते हैं। किन्तु वह कर्तृवाच्य में ही होते हैं। यथा कर्तरि शप् इस सूत्र से विधीयमान शप् विकरण कर्ता में ही होता है। तो कर्मवाच्य और भाववाच्य में किस प्रकार का विकरण होता है यह पूछने पर नूतनविकरण को प्रदर्शित करने के लिए यह सूत्र आरम्भ करते हैं-

27.2 सार्वधातुके यक्॥ (३.१.६७)

सूत्रार्थ - धातु से यक् हो भावकर्मवाची सार्वधातुक परे रहते।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र पद द्वयात्मक है। सार्वधातुके (७/१), यक् (१/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। चिण्भावकर्मणोः यहाँ से भावकर्मणोः इस पद का और धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् (३.१.२२) यहाँ से धातोः इस पद की अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः परश्च ये दोनों सूत्र अधिकार करते हैं। इस प्रकार भावार्थ में और कर्मार्थ में सार्वधातुक प्रत्यय परे रहते धातु से यक् प्रत्यय होता है यह सूत्रार्थ है। यक् का ककार इत्संज्ञक है। अतः य ही शेष रहता है।

यहाँ विशेष- यक् के कित्त्व होने के तीन फल है।

1. सार्वधातुकार्धधातुकयोः इस गुण का निषेध यथा भूयते यहाँ।

टिप्पणियाँ

2. दूसरा सम्प्रसारण। यथा- यजति इत्यस्य भावे इज्यते यह रूप है। यहाँ वचिस्वपियजादीनां किति यह सम्प्रसारण होता है।

3. यक् का कित् करण होने से आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा से अन्त्य अवयव होता है।

उदाहरण - भूयते।

सूत्रार्थसमन्वय - भू धातु से भावार्थ में वर्तमान क्रियावृत्ति की विवक्षा में वर्तमाने लट् इससे लट् लकार होने पर भावकर्मणोः इस सूत्र से आत्मनेपद का विधान होता है। वहाँ भाव अर्थ में औत्सर्गिक एकवचन होता है इस कारण से त प्रत्यय होने पर भू त इस स्थिति में तिङ्शत्सार्वधातुकम् इस सूत्र से तप्रत्यय की सार्वधातुक संज्ञा होने पर सार्वधातुके यक् इस प्रकृतसूत्र से यक् होता है क्योंकि यहाँ भावार्थ और सार्वधातुक प्रत्यय है। यक् के कित्त्व होने से आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा से अन्त्य अवयव होने पर भू य त इस स्थिति में सार्वधातुकार्धधातुकयोः इस सूत्र से गुण प्राप्ति होने पर क्ङिति च इस सूत्र से गुण निषेध होने पर यहाँ के इस अकार की अचोऽन्त्यादि टि इस सूत्र से टि संज्ञा होने पर टित आत्मनेपदानां टेरे इस सूत्र से एत्त्व होने पर भूयते यह रूप सिद्ध होता है।

भू धातु से भाव में लुट् लकार में त आदेश होने पर यक् अपवाद भूत तास् प्रत्यय होने पर भू तास् त इस स्थिति में अग्रिम सूत्र आरम्भ करते हैं-

27.3 स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च॥ (६.४.६२)

सूत्रार्थ - उपदेश में जो अच् है, तदन्त धातुओं और हन् आदि धातुओं को चिण् के समान अङ्गकार्य हो,विकल्प से स्य आदि परे रहते भाव और कर्म जब गम्यमान हो, तथा स्य आदि को इट् आगम भी हो।

सूत्रव्याख्या- इस विधिसूत्र में अष्ट पद हैं। स्यसिच्सीयुट्तासिषु (७/३), भावकर्मणोः (७/२), उपदेशे (७/१), अज्झनग्रहदृशां (६/३), वा (अव्ययम्), चिण्वत् (अव्ययम्), इट् (१/१) च (अव्ययम्) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। स्यश्च सिच्च सीयुट् च तासिश्च तेषामितरेतरयोगद्वन्द्वे स्यसिच्सीयुट्तासयः, तेषु स्यसिच्सीयुट्तासिषु। भावश्च कर्म च तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्वे भावकर्मणी, भावकर्मणी तयोर्भावकर्मणोः। अच्च हनश्च ग्रहश्च दृश्च तेषामितरेतरयोगद्वन्द्वे अज्झनग्रह दृशस्तेषामज्झनग्रहदृशाम्। अङ्गस्य यह सूत्र अधिकार करता है। उपदेशे इस अंश का अच् इस अंश के साथ सम्बन्ध है। अच् अधिकृत अङ्ग का विशेषण होता है। अतः येन विधि स्तदन्तस्य इस सूत्र से तदन्त विधि से उपदेश में जो अच् है,तदन्त अङ्गों का यह अर्थ होता है। और वह अङ्ग धातु से ही होता है। इस प्रकार सूत्रार्थ है-भावकर्म के विषय में स्य-सिच्-सीयुट्-तास् इत्यादि के परे होने पर उपदेश में जो धातु अच् है तदन्त धातु के स्थान पर तथा हन्-ग्रह-दृश् धातुओं के स्थान पर चिण्वत् अङ्गकार्य विकल्प से होता है और स्याद् आदि को इडागम होता है।

उदाहरण – भाविता, भविता।

सूत्रार्थसमन्वय – इस प्रकार भू धातु से लुट् लकार में त प्रत्यय तास् होने पर भू तास् त इस स्थिति में भू धातु से उपदेश में अजन्त होने से और इस भू धातु के उत्तर में तास् के विद्यमान होने से प्रकृत सूत्र से चिण्वद्भाव और इडागम होने पर भू इतास् त यह होता है। तत्पश्चात् चिण्वद्भाव होने से अचो ञ्णिति इस सूत्र से ऊकार की वृद्धि होकर औकार,आव् आदेश होने पर भाव् इतास् त इस स्थिति में त प्रत्यय के स्थान पर ड आदेश, डित्त्व होने से अभस्यापि टेः से लोप होने पर भाविता यह रूप सिद्ध हेता है। चिण्वद्भाव अभावपक्ष में और इडागम अभाव पक्ष में तास् के आर्धधातुक होने से आर्धधातुकस्येड्वलादेः इस सूत्र से तास् के वलादि लक्षणध् होने पर, इडागम होने पर सार्वधातुकार्धधातुकयोः इस सूत्र से भू इसके ऊकार का गुण होकर अवादेश होने पर भव् इतास् ति इस स्थिति में लुटः प्रथमस्य डारौरसः इस सूत्र से तिप् के स्थान पर ड आदेश होने, अनुबन्धलोप होने पर भवितास् यहाँ आस् इसकी टि संज्ञा होती है। तत्पश्चात् डित्त्वविधान सामर्थ्य से अभस्यापि टेः से लोप होता है, इस कारण से आस् का लोप होने पर भविता यह रूप होता है इस प्रकार रूप द्वय सिद्ध होते हैं।

चिण् परे होने पर जो कार्य होते हैं वे हैं –

- अचो ञ्णिति और अत उपधाया इन सूत्रों से वृद्धि।
- आतो युक् चिण्कृतोः इस सूत्र से युगागम।
- हो हन्तेञ्र्णिन्नेषु इस के योग से हन् का कुत्व।
- चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम् इस सूत्र से उपधा की वैकल्पिक वृद्धि।

विशेष – इस सूत्र में ग्रहण की गई धातुएँ – अजन्तधातु, हन्, ग्रह, और दृश्। इस सूत्र की प्रवृत्ति में निमित्त हैं – स्य, सिच्, सीयुट्, तासि। सूत्र का कार्य-चिण्वद्भाव और इडागम जिस पक्ष में चिण्वद्भाव होता है उस पक्ष में ही इडागम होता है। चिण्वद्भाव का अभिप्राय– प्रायः चारों अङ्गकार्य चिण् होने पर पर होते हैं–

- **वृद्धि** – अचो ञ्णिति अथवा अत उपधायाः इनसे णित् निमित्त होने पर वृद्धि। वह स्यात् आदि परे होने पर भी होती है। यथा– भू इट् स्य ते–भौ इ स्य ते –भाविष्यते। ग्रह् इट् स्य ते – ग्राहिष्यते।
- **युगागम** – आतो युक् चिण्कृतोः इस सूत्र से आदन्त धातु को युगागम होता है। वह स्यात् आदि से भी होता है। यथा– दा इट् स्य ते–दा युक् इट् स्यते–दायिष्यते।
- **हन्त से घत्व** – हो हन्तेञ्र्णिन्नेषु इस सूत्र से हन् धातु के हकारस् को घकार होता है। और वह स्यात् आदि से भी होता है। यथा– हन् इट् स्य ते–घन् इ स्य ते– घान् इ स्य ते–घानिष्यते।
- **दीर्घ** – चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम् इस सूत्र से मित् अङ्ग का वैकल्पिक दीर्घ होता है।और वह स्यात् आदि से भी होता है। यथा–शम् इ स्यते–शामिष्यते/शमिष्यते। चिण्वद्भाव के प्रयोजन विषय में शालिनी छन्द में निर्मित महाभाष्य में स्थित रमणीय श्लोक है–

टिप्पणियाँ

चिण्वद्वृद्धिर्युक् च हन्तेश्च घत्वं दीर्घश्चोक्तो यो मितां वा चिणीति।
इट् चासिद्धस्तेन मे लुप्यते णिर्नित्यश्चायं वल्लिमित्तो विघाती।।

(महाभाष्यम्-६.४.६२)

उदाहरण अग्रिम सूत्रों में प्रदर्शित करेगें।

भू धातु से भाव में लुङ्, च्लि,अट् आगम, त प्रत्यय होने पर अभू च्लि त इस स्थिति में च्लेः सिच् इस सूत्र से सिच् प्राप्त होने पर यह सूत्र आरम्भ करते हैं-

27.4 चिण्भावकर्मणोः।। (३.१.६६)

सूत्रार्थ - च्लि के स्थान पर चिण् हो भाव और कर्मवाची त शब्द परे।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र पदद्वयात्मक। चिण् (१/१), भावकर्मणोः (७/२) इति सूत्रगत पदों का विच्छेद है। भावः च कर्म च तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्वे भावकर्मणी, तयोर्भावकर्मणोः। च्लेः सिच् यहाँ से च्लेः की अनुवृति होती है, चिण् ते पदः इससे ते इसकी अनुवृत्ति होती है। भावकर्मवाचक त शब्द परे होने पर च्लि के स्थान पर चिण् आदेश होता है यह सूत्रार्थ है। चिण् का णित्करण वृद्धि के लिए है।

उदाहरण - अभावि त्वया मया अन्यैश्च यह भाव अर्थ में उदाहरण है।

सूत्रार्थसमन्वय- यहाँ भू धातु से भाव अर्थ में लुङ लकार में अ भू त इस स्थिति में च्लि लुङि इस सूत्र से च्लि प्रत्यय होने पर तत्पश्चात् च्लि के स्थान पर च्लेः सिच् इस सूत्र से सिच् की प्राप्ति होने पर उसको बांधकर प्रकृत सूत्र से चिण् आदेश विधान किया जाता है। तत्पश्चात् चिण् के णित्करण होने से अचो ञ्णिति इस सूत्र से वृद्धि होने पर अ भाव् इत इस स्थिति में चिणो लुक् इस सूत्र से त प्रत्यय का लोप होने पर अभावि यह रूप सिद्ध होता है।

अब भू धातु से भाववाच्य होने पर प्रत्येक लकार में रूप कैसे होते हैं, यह वाक्य सहित नीचे प्रदर्शित किया जा रहा है-

लट्	भूयते त्वया मया अन्यैश्च।
लिट्	बभूवे त्वया मया अन्यैश्च।
लुट्	भाविता, भविता त्वया मया अन्यैश्च।
लृट्	भाविष्यते, भविष्यते त्वया मया अन्यैश्च।
लोट्	भूयताम् त्वया मया अन्यैश्च।
लङ्	अभूयत त्वया मया अन्यैश्च।
विधिलिङ्	भूयेत त्वया मया अन्यैश्च।

आशीर्लिङ्	भाविषीष्ट, भविषीष्ट त्वया मया अन्यैश्च।
लुङ्	अभावि त्वया मया अन्यैश्च।
लृङ्	अभाविष्यत, अभविष्यत त्वया मया अन्यैश्च।

यहाँ **ध्यान योग्य** है – अकर्मक धातु कभी उपसर्ग वशीभूत होकर सकर्मक होता है। यथा भू धातु अकर्मक है किन्तु अनु इस उपसर्ग के योग से अनुभव अर्थ प्रतीत होता है। यथा देवदत्तः आनन्दम् अनुभवति यहाँ अनु उपसर्गपूर्वक भू धातु सकर्मकता को प्राप्त करती है। अतः इस वाक्य का कर्मवाच्य में प्रयोग परिवर्तन किया जाता है तो देवदत्तेन आनन्दः अनुभूयते यह प्रयोग होगा। अतः देवदत्तेन आनन्दः **अनुभूयते** यहाँ अनुभूयते यह **कर्मार्थ** में उदाहरण है। यहाँ कर्म में लकार है। अतः कर्म तिङ् उक्त है इस कारण से आनन्दः यहाँ कर्म में द्वितीया विभक्ति नहीं हुई है, अपितु प्रातिपदिकार्थ लिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा इस सूत्र से प्रातिपदिकार्थ में प्रथमा विभक्ति हुई है। कर्म उक्त है इस कारण से अन्य सभी के अनुक्त होने से कर्ता अनुक्त होता है। इसलिए ही कर्तृकरणयोस्तृतीया इस सूत्र से अनुक्त कर्ता में तृतीया विभक्ति होता है, अतः देवदत्तेन यहाँ तृतीया विभक्ति है। भाववाच्य में प्रथमपुरुष एकवचन मात्र ही होता है, किन्तु सकर्मक स्थल पर कर्मवाच्य में सभी पुरुष और सभी वचन होते हैं यह सम्यक् रूप से स्मरण रखना चाहिए। और कर्म के वचनानुसार तङ् में वचन होता है, अतः अनुभूयते यहाँ एकवचन होता है। इसके अतिरिक्त उदाहरण यहाँ प्रर्दशित किए गए हैं, उन प्रयोगों को कृपया देखिए–

- **प्रथमपुरुष कर्ता**– चैत्रेण चैत्रमैत्राभ्याम् चैत्रमैत्रगोपालैः आनन्दः अनुभूयते, आनन्दौ अनुभूयेते, आनन्दा अनुभूयन्ते।
- **मध्यमपुरुष कर्ता**– त्वया, युवाभ्याम्, युष्माभिः, आनन्दः अनुभूयते, आनन्दौ अनुभूयेते, आनन्दा अनुभूयन्ते।
- **उत्तमपुरुष कर्ता**–मया, आवाभ्याम्, अस्माभिः, आनन्दः अनुभूयते, आनन्दौ अनुभूयेते, आनन्दा अनुभूयन्ते।

किन्तु युष्मदर्थ यदि कर्म होता है तब युष्मदर्थ की क्रिया में मध्यमपुरुष होता है–

- **प्रथमपुरुष कर्ता**– चैत्रेण चैत्रमैत्राभ्याम् चैत्रमैत्रगोपालैः त्वम् अनुभूयसे, युवाम् अनुभूयेथे, यूयम् अनुभूयध्वे।
- **उत्तमपुरुष कर्ता**–मया, आवाभ्याम्, अस्माभिः त्वम् अनुभूयसे, युवाम् अनुभूयेथे, यूयम् अनुभूयध्वे।

यदि अस्मदर्थ कर्म होता है तब अस्मदर्थ की क्रिया में उत्तमपुरुष होता है–

- **प्रथमपुरुष कर्ता**– चैत्रेण चैत्रमैत्राभ्याम् चैत्रमैत्रगोपालैः अहम् अनुभूये, आवाम् अनुभूयावहे, वयम् अनुभूयामहे।
- **मध्यमपुरुष कर्ता**– त्वया, युवाभ्याम्, युष्माभिः अहम् अनुभूये, आवाम् अनुभूयावहे, वयम् अनुभूयामहे। एवम् अन्यत्रापि चिन्त्यताम्।

पाठगत प्रश्न 27.1

1. अकर्मक धातुओं से किस अर्थ में लकार होता है?
2. सकर्मक धातुओं से किस अर्थ में लकार होता है?
3. भाव और कर्म में कौन सा लकार होता है?
4. भाव और कर्म से आत्मनेपदविधायक सूत्र कौन सा है?
5. चिण्भावकर्मणोः इस का सूत्रार्थ लिखिए।
6. भू धातु से भाव में लुङ् करने पर क्या रूप होता है?
7. चिण् परे रहते कितने अङ्गकार्य होते हैं?
8. भाव में सभी वचन और पुरुष होते हैं। क्या यह उचित है अथवा अनुचित है?
9. कर्म में सभी वचन और पुरुष होते हैं। क्या यह उचित है अथवा अनुचित है?
10. भाव में किस प्रकार के वचन और पुरुष होते हैं?
11. अनुभूयते क्या यह सकर्मक है?
12. स्यसिच्-आदि सूत्र को पूरा कीजिए?

लभ्धातोः लुङि प्रथमपुरुषैकचने च्लेः चिण्-आदेशे अलभ् इ त इति स्थिते सूत्रमिदमारभ्यते -

27.5 विभाषा चिण्णमुलोः॥ (७.१.६९)

सूत्रार्थ - लभ् धातु को नुमागम विकल्प से हो चिण् और णमुल् परे रहते।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र पद द्वयात्मक है। विभाषा (१/१), चिण्णमुलोः (७/२) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। चिण् च णमुल् च तयोरितरेतरयोगद्वन्द्वे चिण्णमुलौ, तयोः चिण्णमुलोः। लभेश्च यहाँ लभेः इसकी और इदितो नुम् धातोः यहाँ से नुम् इसकी अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार चिण् परे रहते अथवा णमुल् परे रहते लभ् धातु से विकल्प से नुम् आगम होता है यह सूत्रार्थ है।

विशेष- इस सूत्र में व्यवस्थित विभाषा आश्रित होती है। अतः उपसर्ग रहित धातु से विकल्प से नुम् आगम होता है। उपसर्ग सहित लभ् धातु से तो नित्य ही नुमागम होता है। अतः उपालम्भि यह रूप होता है न कि उपालाभि।

उदाहरण - अलम्भि, अलाभि।

सूत्रार्थसमन्वय - और इस प्रकार लभ् धातु से लुङ् लकार में त प्रत्यय, चिण् होने पर अलभ् इ त यह होता है।और वहाँ चिण् परे है इस कारण से प्रकृत सूत्र से विकल्प से नुमागम होता

है। तत्पश्चात् नकार का अनुस्वार होने पर और अनुस्वार का परसवर्ण होने पर चिणो लुक् इस सूत्र से त प्रत्यय का लोप होने पर अलम्भि यह रूप सिद्ध होता है। जब नुम् नहीं होता है तब चिण् के णित्त्व होने से उपधावृद्धि होने पर अलाभि यह रूप सिद्ध होता है।

भञ्ज आमर्दने इस धातु से कर्मवाच्य में लुङ् लकार प्रथमपुरुष एकवचन की विवक्षा में तप्रत्यय, यक्, च्लि, चिण् होने पर अभन्ज् इ त इस स्थिति में यह सूत्र आरम्भ करते हैं-

27.6 भञ्जेश्चिणि॥ (६.४.३३)

सूत्रार्थ - भञ्ज् धातु के नकार का लोप हो चिण् परे रहते विकल्प से।

सूत्रव्याख्या - यह सूत्र पदद्वयात्मक है। भञ्जेः (६/१), चिणि (७/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। श्नान्नलोपः यहाँ से नलोपः इस पद की अनुवृत्ति होती है।और भी जान्तनशां विभाषा यहाँ से विभाषा इसकी अनुवृत्ति होती है।और चिण् परे रहते भन्ज् धातु के नकार का विकल्प से लोप होता है यह सूत्रार्थ है।

उदाहरण - अभाजि, अभञ्जि।

सूत्रार्थसमन्वय - यहाँ भन्ज् धातु से लुङ् लकार होने पर अभन्ज् इ त इस स्थिति में प्रकृत सूत्र से नकार का लोप होता है। क्योकिं यहाँ भन्ज् धातु से परे चिण्प्रत्यय है। तत्पश्चात् अत उपधायाः इस सूत्र से उपधावृद्धि होने पर अभाज् इत इस स्थिति में चिणो लुक् इस सूत्र से तकार का लोप होने पर अभाजि यह सिद्ध होता है। जब तो नकार का लोप नहीं होता है तब उपधा में अकार नहीं होता है, इस कारण से वृद्धि भी नहीं होती है अतः अभञ्जि यह रूप भी सिद्ध होता है।

तनु विस्तारे इस सकर्मक धातु से कर्म में लट् लकार, त आदेश, यक्-विकरण,तन् य त इस स्थिति में यह सूत्र आरम्भ करते हैं। -

27.7 तनोतर्यकि॥ (६.४.४४)

सूत्रार्थ - तन् धातु को आकार अन्तादेश होता है विकल्प से यक् परे रहते।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र पद द्वयात्मक है। तनोतेः (६/१), यकि (७/१) इति सूत्रगत पदों का विच्छेद है। विड्वनोरनुनासिकस्यात् यहाँ से आत् इसकी अनुवृत्ति होती है और ये विभाषा इससे विभाषा इसकी अनुवृत्ति होती है। तत्पश्चात् तन् धातु के स्थान पर विकल्प से आकार अन्तादेश होता है यक् परे रहते यह सूत्रार्थ है। अलोन्त्यस्य इति परिभाषा से (अन्त्य के) नकार को ही यह आदेश होता है।

उदाहरण - तायते, तन्यते।

सूत्रार्थसमन्वय - इस प्रकार तन् य त इस स्थिति में प्रकृत सूत्र से नकार के स्थान पर आकार आदेश होता है। क्योंकि यहां तन् धातु से यक् विहित है। तत्पश्चात् सवर्णदीर्घ होने पर तायत इस

टिप्पणियाँ

स्थिति में टेः सूत्र से एत्त्व होने पर तायते यह रूप सिद्ध होता है। आत्त्व अभाव दशा में तो तन्यते यह रूप होता है। इस प्रकार रूप द्वय सिद्ध होते हैं।

तप् धातु से लुङ् में प्रथम पुरुष एकवचन में च्लौ अ तप् च्लि त इस स्थिति में चिण्भावकर्मणोः इस सूत्र से च्लि के स्थान पर चिण् प्राप्त होने पर यह सूत्र आरम्भ करते हैं –

27.8 तपोऽनुतापे च॥ (३.१.६५)

सूत्रार्थः – तप् से च्लि को चिण् न हो कर्मकर्ता और अनुताप अर्थ में।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र पदत्रयात्मक है। तपः (५/१), अनुतापे (७/१) च यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। च्लेः सिच् यहाँ से च्लेः इसकी, चिण् ते पदः यहाँ से चिण् इसकी, न रुधः यहाँ से न इसकी और अचः कर्मकर्तरि यहाँ से कर्मकर्तरि इसकी अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार तप् धातु से उत्तर के च्लि के स्थान पर चिण् आदेश नहीं होता है कर्मकर्ता और अनुताप(पश्चाताप) अर्थ में।

यहाँ विशेष – कर्मकर्ता का उदाहरण काशिका अथवा वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी के कर्मकर्तृप्रकरण में देखिए। यहाँ तो प्रकरण वश भावकर्म प्रक्रिया में अनुताप अर्थ में उदाहरण प्रदर्शित करते हैं।

उदाहरण– अन्वतप्त पापेन।

सूत्रार्थसमन्वय – यहाँ भाव में अथवा कर्म में अनु उपसर्गपूर्वक तप् धातु से लुङ्, च्लि, त प्रत्यय होने पर अनु अ तप् च्लि त इस दशा में अनुताप अर्थ के होने से प्रकृत सूत्र से चिण् निषेध होता है। तत्पश्चात् च्लेः सिच् इस सूत्र से सिच् आदेश, अनुबन्धलोप होने पर अनु अ तप् स् त इस स्थिति में झलो झलि इस सूत्र से सकार के लोप होने पर इको यणचि इस सूत्र से यण् वकार होने पर अन्वतप्त यह रूप सिद्ध होता है।जब तो अनुताप अर्थ नहीं होता है तब चिण् होता ही है यथा– उदतापि सुवर्ण सुवर्णकारेण।

शम्धातोः लुङि प्रथमपुरुषैकवचने अ शम् इ त इति स्थिते उपधावृद्धौ प्राप्तायां सूत्रमिदमारभ्यते–

27.9 नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्यानाचमेः॥ (७.३.३४)

सूत्रार्थ – उपदेश अवस्था में उदात्त अकारान्त धातु की उपधा को वृद्धि नहीं होती है चिण्, ञित्, णित् और कृत् परे रहते, आपूर्वक चम् धातु के अतिरिक्त।

सूत्रव्याख्या – इस विधिसूत्र में चार पद हैं। न (अव्ययम्), उदात्तोपदेशस्य (६/१), मान्तस्य (६/१), अनाचमेः (६/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। उदात्त उपदेशो यस्य स उदात्तोपदेशः, बहुव्रीहिः। मोऽन्ते यस्य स मान्तः तस्य मान्तस्य, बहुव्रीहिः। न आचमिः अनाचमिः तस्य अनाचमेः। मृजेर्वृद्धिः यहाँ से वृद्धिः इसकी, अत उपधायाः यहाँ से उपधायाः इसकी, अचो ञ्णिति यहाँ से ञ्णिति इसकी और आतो युक् चिण्कृतोः यहाँ से चिण्कृतोः इसकी अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार पूर्वोक्त सूत्रार्थ सिद्ध होता है।

उदाहरण – अशमि।

सूत्रार्थसमन्वय – इस प्रकार शम् धातु से लुङ् में त प्रत्यय, च्लि, च्लि के स्थान पर सिच्, सिच् के स्थान पर चिण्भावकर्मणोः इस सूत्र से चिणादेश होने पर अ शम् इ त इस स्थिति में उपधावृद्धि प्राप्त होने पर प्रकृत सूत्र से यहाँ वृद्धि का निषेध होता है। क्योंकि यहाँ शम् इस मान्त से पर चिण् है। तत्पश्चात् चिणो लुक् इस सूत्र से चिण् का लोप होने पर अशमि यह रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार ही अदमि इत्यादि सिद्ध होता है।

दा धातु अनिट् है। अतः वलादिलक्षण के इट् का निषेध प्राप्त है। किन्तु उपदेशावस्था में अजन्त होने से स्यसिच्सीयुडादि सूत्र से पक्ष में चिण्वद् इट होने पर यह सूत्र प्रवर्तित होता है–

27.10 आतो युक्चिण्कृतोः।। (७.३.३३)

सूत्रार्थ – आदन्त धातुओं को युगागम हो चिण् ञित् और कृत् परे रहते।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र पद त्रयात्मक है। आतः (६/१), युक् (१/१), चिण्कतोः (७/२) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। अङ्गस्य इसका अधिकार है। आतः यह अङ्गस्य का विशेषण है। विशेषण होने से तदन्त विधि में आदन्त अङ्ग से यह अर्थ होता है। चिण् च कृत् च तयोरितरेतरयोगद्वन्द्वे चिण्कृतौ, तयोः चिण्कृतोः। अचो ञ्णिति यहाँ से ञ्णिति इत्सकी अनुवृत्ति होती है। ञ्णिति इसका चिण्कृतोः यहाँ के कृत् अंश के साथ सम्बन्ध है। युगागम के कित्त्व होने से आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा से अन्त्य अवयव होता है। इस प्रकार सूत्र का अर्थ है – आदन्त अङ्ग को युगागम होता है चिण् परे रहते अथवा ञित्, णित् और कृत् प्रत्यय परे रहते। युक् का ककार इत्संज्ञक है, उकार उच्चारण के लिए है। अतः य्–मात्र ही शेष रहता है,यह ध्यान योग्य है।

उदाहरणम– दायिता,दाता।

सूत्रार्थसमन्वय – प्रसङ्ग होने से चिण् का उदाहरण ही यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। शेष के उदाहरण कृदन्त प्रकरण में प्राप्त होते हैं। दा धातु से भावकर्म में लुट्, प्रथमपुरुष एकवचन में त प्रत्यय तास्, स्यसिच्सीयुडादि सूत्र से पक्ष में चिण्वद् इट् होने पर दा इतास् त इस स्थिति में तास् का चिण्वद्भाव होने से चिण् पर में ही है। और दा यह आदन्त अङ्ग भी है। अतः प्रकृत सूत्र से युगागम होने पर लुट् के स्थान पर ड आदेश और टिलोप होने पर दाय् इ त् आ इस स्थिति में सभी का वर्णसम्मेलन होने पर दायिता यह रूप सिद्ध होता है, चिण्वदिट् अभाव में दाता यह रूप सिद्ध होता है। ये रूप द्वय सिद्ध होते हैं।

ण्यन्त शम् धातु से हेतुमण्णिचि लुट् में तप्रत्यय तास् होने पर शमि इ तास् त यह होता है। अतः यह धातु णिजन्त है इस कारण से धातु के अजन्त होने से चिण्वद्भाव और इट् होने पर शम् इ इ इतास् त इस स्थिति में णेरनिटि इस सूत्र से प्रथम और द्वितीय दोनों णिचों का लोप होने पर शम् इ तास् त इस दशा में यह सूत्र आरम्भ किया गया है –

टिप्पणियाँ

27.11 चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम्॥ (६.४.९३)

सूत्रार्थ - चिण् और णमुल् परक णिच् परे रहते मित् की उपधा का दीर्घ हो विकल्प से।

सूत्रव्याख्या - इस विधिसूत्र में तीन पद है। चिणण्णमुलोः (७/२), दीर्घः (१/१), अन्यतरस्याम् (सप्तमीविभक्तिप्रतिरूपकमव्ययम्) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। चिण् च णमुल् च तयोरितरेतरयोगद्वन्द्वे चिण्णमुलौ तयोः चिण्णमुलोः। दोषो णौ यहाँ से णौ इसकी, ऊदुपधायाः गोहः यहाँ से उपधायाः इसकी और मितां ह्रस्वः यहाँ से मिताम् इसकी अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार सूत्रार्थ है- चिण्परक और णमुल्परक णिच् पर में रहते मित्संज्ञक धातु की उपधा का विकल्प से दीर्घ हो।

उदाहरण- शामिता, शमिता, शमयिता।

सूत्रार्थसमन्वय- इस प्रकार शम् इ तास् त इस स्थिति में उपधा भूत अकार का चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्य तरस्याम् इस योग से विकल्प से दीर्घ होने पर शाम् इ तास् त इस स्थिति में त प्रत्यय को डादेश होने पर डित्त्वसामर्थ्य से भसंज्ञक नहीं होने पर भी टि आस् का लोप होने पर शामिता यह रूप सिद्ध होता है, दीर्घ अभाव पक्ष में शमिता यह रूप सिद्ध होता है। और चिण्वद्भाव विकल्प से होता है, इस कारण से जब चिण्वद्भाव नहीं होता है तब णि के इकार का गुण एकार होने पर उसका अय् आदेश और सर्व वर्णसम्मेलन होने पर शमयिता यह रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार तीन रूप होते हैं।

द्विकर्मकधातुस्थल में प्रयोग परिवर्तन के प्रकार

लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः इस सूत्र से कर्म में लकार होता है यह आप पूर्व में जान चुके हैं। किन्तु वहां प्रश्न उठता है कि द्विकर्मक धातु के स्थल में अर्थात् जिस धातु में दो कर्म होते हैं उनमें किस कर्म में लकार होता है। उसके उत्तर के लिए हम कारकप्रकरणस्थ सूत्रों को देखते हैं। वहाँ अकथितञ्च इस सूत्र से अपादानादिकारकों से अविवक्षित कारक की कर्मसंज्ञा होती है। वह अप्रधान अथवा गौण कर्म कहलाता है। कर्तुरीप्सिततमं कर्म इत्यादि सूत्र से जिसकी कर्मसंज्ञा होती है, वह प्रधान अथवा मुख्य कर्म कहलाता है। इस प्रकार कर्म के भेद द्वय को सम्यक् रूप से जानना चाहिए। वहाँ मुख्य कर्म में लकार होता है अथवा गौण कर्म में लकार होता है यह पूछने पर कहते हैं -

गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नीहृकृष्वहाम्। इति

दुह, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष् इन द्वादश धातुओं से गौण कर्म में लकार होता है। नी, हृ, कृष्, वह् इन चारों धातुओं से प्रधान कर्म में प्रत्यय होता है।

यथा- गां दोग्धि पयः गोपः इस कर्तृवाच्य का कर्मवाच्य में परिवर्तन किया जाता है तो - गौः दुह्यते पयः गोपेन यह वाक्य होता है। यहाँ दुह् धातु द्विकर्मक है। पयः यह प्रधान कर्म है,और उसकी कर्मसंज्ञा कर्तुरीप्सिततमं कर्म इस सूत्र से होती है, गाम् यह अप्रधान कर्म है और उसकी

कर्मसंज्ञा अकथितं च इससे होती है। पूर्वोक्त श्लोक के अनुसार यहाँ अप्रधान कर्म में लकार होता है। अप्रधान कर्म में लकार होता है इस कारण से अप्रधान कर्म ही उक्त होता है। और प्रधान कर्म पयः यह अनुक्त है। क्योंकि वहां लकार विहित नहीं है। कर्मणि द्वितीया इस सूत्र से तो अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है न कि उक्त कर्म में। अतः पयः यहाँ द्वितीया विभक्ति है पयः यह प्रथमान्त है, यह चिन्तन करके भ्रान्त नहीं होना चाहिए।

आपके सौकर्य के लिए नीचे स्तम्भनिर्माण से उदाहरणों को आलोचित जा रहा है, पहले अकथितं च इस सूत्र में स्थित दुह्यादि धातुओं के उदाहरण प्रदर्शित किए जाते हैं-

कर्ता में प्रयोगः	कर्म में प्रयोग	अप्रधान कर्म	प्रधान कर्म
गां दोग्धि पयः	गौः दुह्यते पयः	गौः	पयः
बलिं याचते वसुधाम्	बलिः याच्यते वसुधाम्	बलिः	वसुधा
अविनीतं विनयं याचते	अविनीतो विनयं याच्यते	अविनीतः	विनयः
तण्डुलान् ओदनं पचति	तण्डुलाः ओदनं पच्यन्ते	तण्डुलाः	ओदनः
गर्गान् शतं दण्डयति	गर्गाः शतं दण्ड्यन्ते	गर्गाः	शतम्
व्रजम् अवरुणद्धि गाम्	व्रजः अवरुध्यन्ते गाम्	व्रजः	गौः
माणवकं पन्थानं पृच्छति	माणवकः पन्थानं पृच्छ्यते	माणवकः	पन्थाः
वृक्षम् अवचिनोति फलानि	वृक्षः अवचीयते फलानि	वृक्षः	फलानि
माणवकं धर्मं ब्रूते	माणवको धर्मं उच्यते	माणवकः	धर्मः
माणवकं धर्मं शास्ति	माणवको धर्मं शिष्यते	माणवकः	धर्मः
शतं जयति देवदत्तम्	शतं जीयते देवदत्तः	देवदत्तः	शतम्
सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति	सुधां क्षीरनिधिः मथ्यते	क्षीरनिधिः	सुधा
देवदत्तं शतं मुष्णाति	देवदत्तः शतं मुष्यते	देवदत्तः	शतम्

अब नी आदि धातुओं के उदाहरण प्रदर्शित करते हैं-

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य	अप्रधान कर्म	प्रधान कर्म
अजां ग्रामं नयति	अजा ग्रामं नीयते	अजा	ग्रामः
अजां ग्रामं हरति	अजा ग्रामं ह्रियते	अजा	ग्रामः
अजां ग्रामं कर्षति	अजा ग्रामं कृष्यते	अजा	ग्रामः
अजां ग्रामं वहति	अजा ग्रामं उह्यते	अजा	ग्रामः

अतः–

बुद्धिभक्षार्थयोः शब्दकर्मकाणां निजेच्छया।।
प्रयोज्यकर्मण्यन्येषां ण्यन्तानां लादयो मताः।

गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ इस सूत्र से जिनकी कर्मसंज्ञा होती है, उनमें बुद्ध्यर्थक धातु से भक्षणार्थक धातु से और शब्द सकर्मक धातु से वक्ता स्वेच्छानुसार प्रधान अथवा अप्रधान कर्म में लकार विधान कर सकता है। अर्थात् वहाँ पहले कहा गया नियम नहीं है। गत्यर्थकादि धातुओं के लिए तो जिसकी कर्मसंज्ञा होती है उसके समान कर्म में और प्रयोज्य कर्म में लकारादि प्रत्यय होता है। बोध्यते माणवकं धर्मः अथवा माणवको धर्मम् इस वाक्य में प्रधान कर्म धर्मः है, और अप्रधान माणवकः है। अतः वहाँ स्वेच्छानुसार कर्म में लकार होता है, इस कारण से प्रधान कर्म में लकार होता है। और उक्त प्रधान कर्म में प्रथमा का विधान करके गुरुणा बोध्यते माणवकं धर्मः यह वाक्य होता है। जब अप्रधान कर्म में लकार होता है, तब तो उक्त प्रधान कर्म में प्रथमा का विधान करके गुरुणा माणवको धर्म बोध्यते यह वाक्य होता है। अनुक्त कर्म में द्वितीया होती है, कर्मणि द्वितीया इसके योग से यह तो आप जानते ही हैं इसलिए यहाँ बुद्ध्यर्थक धातुओं के उदाहरण आलोचित किए गए हैं। मात्रा भोज्यते माणवकम् ओदनः, माणवक ओदनं वा भोज्यते यह प्रत्यवसानार्थक का उदाहरण है।

यज्ञदत्तेन देवदत्तो ग्रामं गम्यते। यहाँ प्रयोज्यकर्म देवदत्तः है। प्रयोज्यकर्मण्यन्येषां ण्यन्तानां लादयो मताः इससे प्रयोज्यकर्म में ही लकार होता है, जिससे प्रयोज्यकर्म देवदत्त आदि के उक्त होने से प्रथमाविभक्ति होती है। उससे देवदत्तो ग्रामं गम्यते इत्यादि वाक्य सिद्ध होता है। प्रयोज्यकर्म से भिन्न ईप्सिततम कर्म ग्राम शब्द से तो द्वितीया ही होती है। गम्यते यहाँ हेतुमण्णिजन्त गम् धातु से प्रयोज्यकर्म में लकार होता है।

कुछ धातुओं के कर्मवाच्य और भाववाच्य में लट् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में रूप नीचे प्रदर्शित किए जा रहे हैं, जिससे आप उन रूपों का प्रयोग व्यवहार में कर सकेंगें।

मूल धातु	कर्तृवाच्य	भावकर्मरूप	अर्थ (हिन्दीभाषा)
अर्च्	अर्चति	अर्च्यते	(किसी से) पूजा जाता है।
अस्	अस्ति	भूयते	हुआ जाता है।
आप्	आप्नोति	आप्यते	पाया जाता है।
इङ्	अधीते	अधीयते	पढ़ा जाता है।
इष्	इच्छति	इष्यते	चाहा जाता है।
कथ्	कथयति	कथ्यते	कहा जाता है।
कृ	करोति	क्रियते	किया जाता है।

कृष्	कर्षति	कृष्यते	जोता जाता है।
क्री	क्रीणाति	क्रीयते	खरीदा जाता है।
क्षिप्	क्षिपति	क्षिप्यते	फेंका जाता है।
खाद्	खादति	खाद्यते	खाया जाता है।
गण्	गणयति	गण्यते	गिना जाता है।
गम्	गच्छति	गम्यते	जाया जाता है।
गै	गायति	गीयते	गाया जाता है।
ग्रह्	गृह्णाति	गृह्यते	ग्रहण किया जाता है।
चिन्त्	चिन्तयति	चिन्त्यते	सोचा जाता है।
चुर्	चोरयति	चोर्यते	चुराया जाता है।
ज्ञा	जानाति	ज्ञायते	जाना जाता है।
तृ	तरति	तीर्यते	पार किया जाता है।
त्यज्	त्यजति	त्यज्यते	छोड़ा जाता है।
दह्	दहति	दह्यते	जलाया जाता है।
दा	ददाति	दीयते	दिया जाता है।
दुह्	दोग्धि	दुह्यते	दुहा जाता है।
दृश्	पश्यति	दृश्यते	देखा जाता है।
ध्यै	ध्यायति	ध्यायते	ध्यान किया जाता है।
नम्	नमति	नम्यते	नमस्कार किया जाता है।
नी	नयति	नीयते	ले जाया जाता है।
पच्	पचति	पच्यते	पकाया जाता है।
पठ्	पठति	पठ्यते	पढ़ा जाता है।
पा	पिबति	पीयते	पिया जाता है।
पाल्	पालयति	पाल्यते	पाला जाता है।
पूज्	पूजयति	पूज्यते	पूजा किया जाता है।
प्रच्छ्	पृच्छति	पृच्छ्यते	पूछाँ जाता है।

टिप्पणियाँ

बन्ध्	बध्नाति	बध्यते	बाँधा जाता है।
ब्रू	ब्रवीति	उच्यते	कहा जाता है।
भाष्	भाषते	भाष्यते	कहा जाता है।
याच्	याचते	याच्यते	माँगा जाता है।

विवक्षा से कारक होते हैं। अतः कोई भी वाक्य कर्तृवाच्य में,कर्मवाच्य में अथवा भाववाच्य में वक्ता प्रयोग कर सकता है पारयति। नीचे उन तीनों वाच्यों में कुछ वाक्यों के प्रयोग प्रदर्शित करते हैं –

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
सः भवति।	तेन भूयते।
त्वं भवसि।	त्वया भूयते।
अहं भवामि।	मया भूयते।
प्रसिद्धः पुरुषो भवेत्।	प्रसिद्धेन पुरुषेण भूयेत।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
रामः विद्यालयं गच्छति।	रामेण विद्यालयः गम्यते।
रामः ओदनं खादति।	रामेण ओदनः खाद्यते।
त्वं घटं कुरु।	त्वया घटः क्रियताम्।
त्वं पुस्तकं पठ।	त्वया पुस्तकं पठ्यताम्।
अहं जलं न पास्यामि।	मया जलं न पास्यते।
बालाः पुष्पाणि चिन्वन्ति।	बालैः पुष्पाणि चीयन्ते।
भवान् ग्रामं गच्छतु।	भवता ग्रामः गम्यताम्।
यूयं कार्यम् अकार्ष्ट।	युष्माभिः कार्यम् अकारि।
ते देवान् यजेयुः।	तैः देवाः इज्येरन्।
वयं युवां द्रक्ष्यामः।	अस्माभिः युवां द्रक्ष्येथे।
आवां युष्मान् रक्षेव।	आवाभ्यां यूयं रक्षेध्वम्।
त्वं मां परिचिनु	त्वया अहं परिचीयै।
भवन्तः आवाम् अजानन्।	भवद्भिः आवाम् अज्ञायावहि।
तौ अस्मान् अस्तौष्टाम्।	ताभ्यां वयम् अस्ताविष्महि।

पाठगत प्रश्न 27.2

1. विभाषा चिण्णमुलोः इस सूत्र का क्या अर्थ है?
2. णिजन्त शम् धातु से लुट् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में कितने रूप होते हैं और वे कौन से हैं?
3. आतो युक्चिण्कृतोः इस सूत्र से किसका विधान किया जाता है?
4. दा धातु से लुट् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में कितने रूप होते हैं और वे कौन से है?
5. नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्यानाचामेः इस सूत्र से क्या किया जाता है?
6. तपोऽनुतापे च इसका उदाहरण कौन सा है?
7. तन्धातु से कर्म में लट् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में कितने रूप होते हैं और वे कौन से है?
8. भञ्ज् धातु से कर्म में लुङ् लकार प्रथमपुरुष एकवचन मे कितने रूप होते है और वे कौन से है?

पाठ का सार

लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः इस सूत्र से कर्ता, कर्म और भाव ये तीन लकार अर्थ कह गये है। यहाँ तो विशेष है कि अकर्मक धातुओं से कर्ता और भाव में लकार होते हैं। सकर्मक धातुओं से तो कर्ता और कर्म में। भाव, क्रिया, व्यापार, भावना, उत्पादना ये पर्याय शब्द है। वस्तुतः भाव धातु का ही अर्थ है अतः लकार से अनुवाद मात्र किया जाता है। भाव अमूर्त पदार्थ है। अतः उसमें लिङ्गसंख्या का अन्वय नहीं होता है इस कारण से पदसाधुत्वार्थमेव एकवचनमुत्सर्गतः करिष्यते इस न्याय से प्रथमपुरुष एकवचनान्त रूप ही प्रत्येक लकार में होता है, यह सम्यक् रूप से समझना चाहिए।। कर्म में लकार में तो सभी पुरुष और सभी वचन होते हैं यह विशेष है। और अन्त में द्विकर्मक धातु के विषय में चर्चा की गई है। द्विकर्मक धातु के स्थल पर कैसे वाच्य परिवर्तन होता है, इस विषय में बहुत उदाहरण प्रदर्शित किए गए हैं। और अन्त में अनेक वाक्यों में भाव अथवा कर्म में वाच्य परिवर्तन दर्शाये गए हैं। उनका अभ्यास करना चाहिए।

पाठांत प्रश्न

1. भावकर्मणोः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. भाव में लकार होने पर किस प्रकार वचन और पुरुष होते हैं यह व्याख्या कीजिए।

3. कर्म में लकार होने पर किस प्रकार वचनपुरुष होते हैं यह व्याख्या कीजिए।
4. चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम् इस सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
5. भूयते इस रूप को सिद्ध कीजिए।
6. स्यसिच्सीयुट्-आदि सूत्र को पूरा करके व्याख्या कीजिए।
7. भावार्थक लकार और कर्मार्थक लकार में से विशेष कौन सा है यह विवेचन कीजिए।
8. भूयते यहाँ प्रथमपुरुष एकवचन ही किसलिए होता है यह इति स्पष्ट कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

27.1

1. भाव और कर्ता अर्थ में।
2. कर्म और कर्ता अर्थ में।
3. आत्मनेपद।
4. भावकर्मणोः।
5. भावकर्मवाचक त शब्द परे रहते च्लि के स्थान पर चिण् आदेश होता है।
6. अभावि।
7. चार।
8. असाधु।
9. साधु।
10. प्रथमपुरुष एकवचन ही होता है।
11. हाँ, सकर्मक है।
12. स्यासिच्सीयुट्तासिषु भावकर्मणोरुपदेशेज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च।

27.2

1. चिण् परे होने पर अथवा णमुल् परे होने पर लभ् धातु से विकल्प से नुम् आगम होता है।

2. रूपत्रय। शामिता, शमिता, शमयिता।

3. युगागम होता है।

4. रूपद्वय। दाता, दायिता।

5. उपधावृद्धि का निषेध।

6. अन्वतप्त पापेन।

7. रूपद्वय। तायते, तन्यते।

8. रूपद्वय। अभाजि, अभञ्जि।

॥ सताइसवां पाठ समाप्त॥